१०८. मानव में श्रेय प्रवृत्ति

०७-१०-२०१३

मानव ही जागृत होकर के श्रेय कर्म में प्रवृत्त होता है | भ्रमित रहकर अपराध कार्यों को करता है

संसार में यह देखा गया, भ्रमित आदमी ही सम्पूर्ण अपराध करता है | सम्पूर्ण प्रकार के अपराध करता है | सम्पूर्ण विधि से भी करता है | पता लगना ही अपूर्णता है | पता नहीं लगना अपराधों का पूर्णता है | ऐसा माना गया है संसार में | इसमें मुख्य बात यही है- स्वयं में स्वयं को जानना, मानना बना ही रहता है; दूसरा कोई जाने, चाहे न जाने | इस विधि से मानव अकेले ही है | जानना एक भाग है, हर व्यक्ति में मानना एक भाग है | मानने वाला बात दूसरे के साथ वर्तमान रहता है | जानने वाला बात स्वयं में समाया रहता है | क्योंकि सह-अस्तित्व नित्य प्रभावी है | सह-अस्तित्व विधि से ही हर एक जर्रा अपने आचरण को चिर बनाए रखता है | जब से धरती तैयार हुआ है तब से मानव जंगल युग से चलकर रॉकेट युग तक चल दिया, वो भी नियति विधि से | इस विधि से चलकर सर्वनाश ही बना | इसमें उत्थान नहीं बना | उत्थान केवल पैसे का रहा | पैसा सदैव कागज पर निर्भर रहा | उन्नत कागज, उन्नत छपाई का योगफल में ही कागज होना पाया जाता है, जिसको हम रुपया कहते हैं |

इसको जानने वाला भी मानता है | मानने वाला भी मानता है | स्वयं में मानव सदा-सदा इस वर्तमान तक गलती करना, दूसरे को समझ में नहीं होना, इसी को बहादुरी माना | इस क्रम में मानव छुपता गया | इसका आधार बनाया परिवार | परिवार में जो कुछ भी गडबड़ी होती है, उसे छुपाने की विधि तैयार हुआ | उसमें संकट पैदा करने का विधि भी तैयार हुआ, जिसको अपराध संहिता कार्यक्रम माना जाता है | इस क्रम में अपराध प्रवृत्ति बढ़ा, न कि घटा | इस विधि से अपराध बढते-बढते जन सामान्य हो गया | अब अपराध और भ्रम दोनों दूर होने का आवश्यकता आ गया तभी विकल्प तैयार हुआ | विकल्प मानव का पुण्य से तैयार हुआ, मानव को अर्पित रहा | इस क्रम में सहीपन को अपनाना ही मेरा लाभ हुआ | सहीपन क्या है? तीनों प्रमाण सम्पन्न रहना | कार्य-व्यवहार प्रमाण, विचार प्रमाण, अनुभव प्रमाण | कार्य-व्यवहार प्रमाण में मानवीय आचरण माना जाता है, मानव चेतना कहलाता है | मानव चेतना विधि से निर्वाह किया गया कार्यक्रम को मानवीयता भी कहा जाता है | मानवीयता विधि से मानव अपराध-मुक्त रहता है, भ्रम-मुक्त रहता है |

विकल्प में अपराध को संघर्ष और युद्ध के रूप में बताया गया है | भ्रम को लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद के रूप में बताया | ये तीनों उन्माद, दो अपराध के उद्देश्य से ही सम्पूर्ण मानव फंस गया है | तभी जन जाति के विचार शैली में बदलाव का दवाब आ रहा है | शनैः शनैः राज्य सोचने के लिये तैयार हुआ | अभी तक राज्य में ऐसा कोई विचार तय नहीं हुआ | तय होने की आशा तो बना ही है | इसी क्रम में मानव जागृति क्रम में काम कर रहा है | ये समझ में आता है | इस समझ के साथ जीने में यही होता है कि अपराध कम होता है, भ्रम कम होता है, उन्मूलन नहीं होता है | उन्मूलन होने के लिये जागृति को अपनाना ही पड़ता है | जागृति अर्थात विकसित चेतना में प्रवेश चिंतन से है | जागृति अपने में सुलभ होना शिक्षा विधि से बताया | शिक्षा विधि में पठन विधि भाषा का माना गया, विकल्प विधि से माना गया | अध्ययन विधि आचरण के रूप में माना गया |

अभी जीवन विद्या कार्यक्रम में 'विकल्प' अध्ययन विधि में ही स्वीकार हुआ है, आचरण नहीं हो रहा है | कुछ प्रयत्न 'विकल्प' को छोड़कर अपना अनुसार विधि बनाने भी हो रहा है | यह भी सुधरेंगे, ऐसे मान कर हम चल रहे हैं | अब विकल्प

पठन के साथ आचरण के लिये प्रवृत्ति तैयार करने का कार्यक्रम अब चल रहा है | इसी क्रम में मानव तीर्थ का अवतरण का आवश्यकता आ गया है | मानव तीर्थ का मतलब मानव कैसे तरेगा अपराध से, भ्रम से | इसी मुख्य मुद्दे पर आधारित मानव तीर्थ तैयार करने का प्रयत्न चल रहा है | मानव तीर्थ में मिलावट विहीन विधि से मध्यस्थ दर्शन का अध्ययन कराया जायेगा | हम समझता हूँ, कुछ समय में यह प्रकाशित होगा | मानव तीर्थ में काम करने वाला अपराध कार्य से मुक्त रहेगा | वैचारिक पवित्रता वैचारिक व्यवस्था के आधार पर होता है | इसी क्रम में दिव्य मानव पर्यंत के व्यवस्था अथवा सार्वभौम व्यवस्था के स्वरूप को बताया गया है विकल्प में | सहज रूप में मानव, मानव चेतना को अपनाता है | मानव चेतना ही मानव का स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार है या इसी अधिकार के आधार पर जब संविधान बने, इसके लिये मूल सूत्र विकल्प रूप में प्रस्तुत है | मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान, जिसमें मनोविज्ञान मानवीय आचार संहिता रुपी संविधान समाया है | इसी के साथ व्यवहारवादी समाजशास्त्र, आवर्तनशील अर्थशास्त्र स्वीकृत है |

इसे दर्शन, विचार, शास्त्र के रूप में प्रस्तुत किया; इसी का नाम आदर्श है, विकल्प है | आदर्श रुपी विकल्प में अथवा विकल्प विधि से मानव चेतना पूरा स्पष्ट होता है अध्ययन विधि से | अध्ययन का स्वरूप शब्दों के अर्थ में समाहित है | आशय आचरण के रूप में व्यक्त है | आचरण ही प्रमाण है | इस क्रम में हम अनुभव का लोकव्यापीकरण कर सकते हैं | अभी तक माना यह गया था कि अनुभव को व्यक्त नहीं किया जा सकता है | इसका उत्तर यही है, आचरण करने से आचरण पता चलता ही है | आचरण ही समझदारी का स्पष्ट जँचाई है | इस जंचाई से हर मानव अपनी प्रतिष्ठा को अनुभव कर सकते हैं | अभी हर मानव पैसे के आधार पर प्रतिष्ठा को जानता है | अधिकार भी, कार्य भी, परिणाम भी केवल पैसा है | इस क्रम में मानव व्यक्तिवादी, समुदायवादी ही हुआ | समुदायवाद, व्यक्तिवाद से मुक्ति के लिये समाजवाद ही एकमात्र रास्ता है | समाज अखण्डता के अर्थ में सार्थक है | समुदायों के रूप में सार्थक नहीं हुआ |

समुदाय वही है जिसमें सामरिक तंत्र, सामरिक क्षमता, सामरिक अधिकार समाया है | जो इसको उन्नत विधि से प्रस्तुत करते हैं वही शक्तिशाली कहलाते हैं | अभी शक्तिशाली कहने का आधार यही है | इस क्रम में अपराध और भ्रम मुक्ति का रास्ता ही नहीं रहा | अपराध और भ्रम की मुक्ति के लिये जब रास्ता खोजते हैं तब अखण्डता, सार्वभौमता ही आती है | अखण्डता, सर्वमानव का समझदारी पर निर्भर है और सर्वमानव का आवश्यकता पर निर्भर है | आवश्यकता में पैसा को मानने के बाद अपराध और भ्रम होना, अपराध और भ्रम वृद्धि होना, इसका प्रेक्टिस होना देखा गया | इस विधि से मानव छुपा कुछ नहीं, मानव के पास छुपाया हुआ कुछ भी नहीं, सभी प्रकट है कालांतर में | इस क्रम में मानव, अधिकतर मानव अपराधी हो गया | अभी उससे छूटने के लिये आवाज भी तैयार है | योजना अभी नहीं बना है | वर्तमान की विधियों को अर्थात अर्थनैतिक, राज्यनैतिक, धर्नैतिक गतिविधियों को हम अध्ययन करता हूँ अभी भी |

मेरी आयु अभी ९३ वर्ष पूरा कर दिया; ९४ वर्ष आगे जनवरी १४ तारीख को खत्म होगा | इस क्रम में मैं चलता रहा, साथ में सोचता रहा- सर्वमानव का शुभ कैसा हो; उसी के लिये विकल्प तैयार हुआ | इसको अनुसंधान, सोच विचार कहा जाय, उपलब्धि कहा जाय, मानव का पुण्य कहा जाय | मैं अपने तरफ से मानव का पुण्य मानता हूँ, तभी विकल्प तैयार हुआ | इसीलिये किसी भी प्रलोभन के बिना समर्पित किया मानव जात को | यह अछोटी में देखने को मिलता है, अछोटी एक ऐसा स्थली है | रायपुर के पास में छोटा सा गाँव है; रायपुर से २०-२५ किलोमीटर दूर | इस क्रम में मैं अपने को अपराध-मुक्त मानता हूँ | पहले मैं भी संसार के आदमी जैसे ही अपराध को ही सोचता रहा | , किये भले न हों | इस क्रम में मानव यदि

गुजरता है, अध्ययन के द्वारा अनुभव होता है | उसी स्थिति में अपराध और भ्रम मुक्ति की रास्ता दिखता है | रास्ता में चलने से अपराध मुक्ति का अहसास होता है | लक्ष्य तक पहुँचने से अपराध-मुक्त हो जाता है | मैं अपने को लक्ष्य तक पहुँचा हुआ व्यक्ति मानता हूँ | मैं जो कहता हूँ समझ के कहता हूँ, जीके कहता हूँ, प्रमाणित करता हुआ जीता हूँ | इस विधि से अभी तक समाधान, समृद्धि प्रमाणित हुई, अभय और सह-अस्तित्व प्रमाणित होने के लिये सर्वमानव जिम्मेदार है | इस जिम्मेदारी को जूझने के लिये, झेलने के लिये, प्रयोग करने के लिये हर व्यक्ति में ताकत है | यदि इस बात को पूरा करता है तब स्वाभाविक विधि से हिम्मत बनता है, दूसरे को भी समझाना बनता है | उसके पहले जितना भी ताकत बनता है वह सब पैसे के लिये बनता है | इसको मैं ऐसा देखा, मैं दिल्ली में I I T में रहा गत शताब्दी के ९० दशक में, उस समय में एक व्यक्ति संसार को बताने के लिये अमेरिका जाकर पैसा लाया, खर्च लाया | मैं अपने में अभी तक अपने ही खर्च से जाता हूँ; कहीं भी अपने ही खर्च से वापस आता हूँ | दूसरे के खर्च से जाता नहीं हूँ, न करता हूँ | आप यही पूछ सकते हैं कि तुम्हारे पास पैसा कैसे आ गया | पैसे का कोई कीमत नहीं है | पैसा केवल कागज है |

हमको जो मिलता है, सारे कागज एक माचिस में चला जाता है | इस ढंग से पैसे का कीमत शून्य देखा | यह हमारे लिये सही, ठीक लगा | सब के लिये कैसा लगेगा, हम नहीं जानता हूँ | सभी जैसा समझते हैं वैसा जीते हैं, ऐसा निश्चय तो आ गया है | निश्चय जो आया है उसके अनुसार मानव का गणना करने से पता लगता है कि मानव जात हर देश काल में सच्चाई का प्यासा है | न्याय, धर्म, सत्य अविभाज्य हैं; सत्य समझ में आने के बाद ही समाधान और न्याय दोनों प्रमाणित होते हैं | इसको मैं प्रमाणित करके देखा हूँ | सर्व समस्या का समाधान हमारे पास है | सर्व समस्या को हम गणना किया हूँ आचरण के रूप में | आचरण में यदि गड़बड़ी होती है, सम नहीं है | आचरण में कोई गड़बड़ीनहीं होता, समझा है | किस आधार पर सोचा गया, ऐसा पूछा जाता है | इसके उत्तर में यही कहना बनता है कि हर मानव शुभ चाहता है |

शुभ को प्रमाणित कितना किया? हम प्रमाणित करके देखा है | शुभ के बारे में यही देखा कि हर मानव सुखी होना चाहता है | यही सर्वशुभ है | बच्चे से लेकर बूढ़े तक सुखी होना चाहते हैं | जो सोचे हैं, करते हैं उसके विपरीत | विपरीत क्या करते हैं? अपराध और प्रलोभन कार्य को करते हैं | दूसरा भाषा से उन्माद कार्यों को करते हैं | ये कैसा शुभ होगा? इसके लिये नीति है | विकल्प ही इसका शिक्षा है | अभी तक भौतिकवाद, आदर्शवाद है। आदर्शवाद पहले प्रभावित हुआ उसके बाद भौतिकवाद प्रभावित हुआ | इन तीनों वाद से जो शिक्षा दिये उससे भ्रम और अपराध दूर नहीं हुआ | परम्परा नहीं बना | परम्परा नहीं बनने से कोई ठीक है, मानना ठीक नहीं है | परम्परा बनने से ही ठीक है ऐसा समझ में आया मुझको | इस क्रम में सोचते-सोचते विकल्प तक पहुँच गया | विकल्प विधि से भ्रम और अपराध मुक्ति का रास्ता है | यही जागृत होने का मतलब है, प्रमाणित होने का मतलब है, अखण्डता, सार्वभौमता का सूत्र है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

-अग्रहार नागराज